IJAER/ November-December 2024/Volume-13/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

संस्कृत पत्रकारिता : ऐतिहासिक विकास एवं आधुनिक चुनौतियाँ

डॉ. ममता गुप्ता

सहायक आचार्य (संस्कृत)

टांटिया यूनिवर्सिटी, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

शोध सार

संस्कृत पत्रकारिता का विकास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक एक लंबी यात्रा रही है। यह केवल समाचार संप्रेषण का माध्यम नहीं अपितु सांस्कृतिक, सामाजिक और बौद्धिक चेतना का संवाहक भी रही है। भारत में संस्कृत पत्रकारिता का प्रारंभ धार्मिक व दार्शनिक विषयों से हुआ, लेकिन आधुनिक युग में इसकी भूमिका विस्तृत हो गई है। तकनीकी प्रगति के बावजूद, संस्कृत पत्रकारिता को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे पाठकों की कमी और डिजिटल युग में इसकी प्रासंगिकता। इसके बावजूद, यह भाषा और परंपरा को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

शब्द कुंजी

सांस्कृतिक, संवाहक, बौद्धिक, चेतना, प्रगति, संरक्षित, प्रासंगिकता, दार्शनिक, संप्रेषण, प्रभावशीलता, प्रतिष्ठान, विमर्श, संवर्द्धन, अनुप्रयोग, शाश्वत, अनुशीलन, संज्ञान, प्रबोधन, अन्वेषण, अभिप्रेरित

'पत्रं करोति तच्छीलमस्य' इस विग्रह में 'पत्र' शब्द के उपपद रहते 'डुकृञ्करणे' इस अर्थ वाली धातु से **'सुप्यजातौ णिनिश्ताच्छील्ये'** 3/2/78 सूत्र से ताच्छील्य अर्थ में 'णिनि' प्रत्यय होता है। अनुबन्ध लोप करने पर 'पत्र+कृ+इन्' शेष रहता है। तब '**आर्धधातुकं शेषः**' 3/4/114 सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा करने पर '**अचोञ्णिति'** 7/2/115 सूत्र से कृ धातु के ऋकार को वृद्धि आदेश होता है। **'उरण्रपरः'** 1/1/51 सूत्र से आकार के रपरक होने पर 'पत्र+क्+आर्+इन्' स्थिति होती है। प्रकृति–प्रत्यय का संयोग करने पर 'पत्रकारिन्' रूप बनता है। तब **'तस्य भावस्त्वतलौ**' 5/1/119 सूत्र से 'तल्' प्रत्यय होता है। लकार का अनुबन्धलोप करने पर 'पत्रकारिन्+त' बनता है। '**न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य'** 8/2/7 सूत्र से नकार का लोप करने पर 'पत्रकारित' रूप बना। ऐसी स्थिति में '**तलन्तं स्त्रियामिति लिङ्गानुशासन.**' सूत्र से तलन्त के स्त्रीत्व अधिकार में होने पर '**अजाद्यतष्टाप्'** 4/1/3 सूत्र से 'टाप्' प्रत्यय होता है। अनुबन्ध लोप करने पर 'पत्रकारित+आ' हुआ। तब **'अकः सवर्णे दीर्घः'** 6/1/101 सूत्र से सवर्ण दीर्घादेश करने पर ''पत्रकारिता'' शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है पत्र–पत्रिकाओं का लेखन–पठन–मुद्रण–प्रकाशनादि स्वाभाविक कर्म।

'पत्रकारिता' अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जो 'जर्नल' से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है– दैनिक अर्थात् दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों और सरकारी बैठकों आदि की विस्तृत जानकारी 'जर्नल' में रहती है। 17वीं एवं 18वीं शती में पीरियाडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' और 'जर्नल' शब्दों के प्रयोग होते थे। बीसवीं शती में गम्भीर समालोचना और विद्वतापूर्ण प्रकाशन को इसके अन्तर्गत माना गया। 'जर्नल' से बना 'जर्नलिज्म' शब्द अपेक्षाकृत व्यापक है। समाचार पत्रों एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन–प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। **समसामयिक गतिविधियों के संचार से सम्बद्ध सभी साधन चाहे वे रेडियो हो या टेलिविजन हो, इसी के अन्तर्गत आते हैं।**[1]

यद्यपि पत्रकारिता हमारे देश में आरम्भिक दिनों में एक उद्देश्य रूप थी, परन्तु वर्तमान में वह शनैः–शनैः व्यवसाय बनती जा रही है। आधुनिक सन्दर्भ में तो संचार साधनों ने पत्रकारिता की दिशा को परिवर्तित कर दिया। समाचारों की गति दिन–प्रतिदिन तीव्र से तीव्रतम वृद्धि को प्राप्त हो रही है। समाचार माध्यमों में प्रतिस्पर्धा अपने चर्म स्तर पर है। समग्र जगत् को सबके समक्ष प्रस्तुत करने वाली पत्र–पत्रिकायें व्यक्ति के जीवन को प्रकाशित करती हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि पत्रकारिता द्वारा जन–जन के लोकमानस तक सहज ही पहुँचा जा सकता है। वर्तमान के परिवर्तित सामाजिक सरोकारों में सत्य को जीवन्त रखने के रहस्य और पत्रकारिता में प्रविष्टि हेतु नवीनतम तकनीकी और विधा से सुपरिचित होना नितान्त आवश्यक है। **'जीवनं सत्यशोधनम्'** की दिशा में जन–जन के चिन्तन और चरित्र को प्रभावित करने तथा उसको जागृत करने में पत्रकारिता की भूमिका अग्रगण्य है। इतिहास साक्षी है, प्रसिद्धि प्राप्त साम्राज्य भी सजग पत्रकारिता के सत्प्रयास से अपने कुचक्र को त्यागने के लिए बाध्य हुए। भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम इसका सबसे ज्वलन्त साक्ष्य है।

सूक्ष्मता से दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट परिभाषित होता है कि पत्रकारिता का दायित्व अतीत, वर्तमान और भविष्य के मध्य एक मंजुल सामंजस्य संस्थापित करना है। यह केवल वर्तमान का ही संकेत नहीं देती, अपितु क्या होने वाला है और क्या हो सकता है? इसका भी विश्लेषण करती है। सही अर्थों में पत्रकारिता सम्पूर्ण सामाजिक चेतना को प्रभावित करती है तथा उसे यथार्थ और विवेकसम्मत प्रतिक्रिया के लिए अभिप्रेरित करती है। वह लोकमानस का परिष्कार तो करती ही है, उसे सतर्क करने के साथ संवेदनशील भी बनाती है। पत्रकारिता व्यक्ति और समाज की रुचि तथा स्वभाव को समृद्ध करती है

एवं उसे अपनी अस्मिता का बोध कराती है। वह व्यक्ति और समाज की इच्छाओं, आवश्यकताओं को प्रतिबिम्बित करती है तथा जो आज समाज में कुछ विकृत हो रहा है, उस पर तीक्ष्ण प्रहार करते हुए उसमें सुधार हेतु मार्गदर्शन करती है। एक ओर वह जहाँ व्यक्तियों को अधिकारों के प्रति सचेत करती है वहीं उनमें कर्त्तव्यबोध की भावना भी उत्पन्न करती है।

इस प्रकार कहा जाता है कि पत्रकारिता पत्रकार द्वारा चारों दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) की सूचनाएँ एकत्र करने और उन्हें जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का माध्यम है। साथ ही जनता के विचारों के अनुसार ही अपनी विचारधारा को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना है। पत्रकारिता एक ऐसा वैविध्यपूर्ण कर्म है, जिसमें जीवन की लघुतम और दीर्घतम स्थितियों का समायोजन होता है। इस प्रकार पत्रकारिता व्यक्ति, समाज, सामाजिक संदर्भों और बहुविध परिवेश की कथा है।

पत्रकारिता जन–भावना का विकास करने वाली सभ्यता और स्वतन्त्रता की वाणी होने के साथ–साथ जगत् में क्रान्ति लाने में भी अग्रणी है। **आज की पत्रकारिता में कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, जीवनी, व्यंग्यात्मक रचनाएँ आदि सम्मिलित हैं अतः पत्रों के अतिरिक्त आकाशवाणी, दूरदर्शन भी पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्मिलित है। इस रूप में प्रकाशन, चित्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा प्रसारण हेतु समसामयिक और सरस तथ्यों के संग्रह और सम्पादन को पत्रकारिता कहा जा सकता है।**[2]

प्रसिद्ध विद्वान, लेखक और पत्रकार इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार **''पत्रकारिता पाँचवाँ वेद है''**। इसके माध्यम से हम ज्ञान–विज्ञान सम्बन्धी वार्ताओं का ज्ञान करके अपने मस्तिष्क को जाग्रत करते है जिससे हमें उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता प्राप्त होती है। प्रायः देखा जाता है कि मानव में जिज्ञासा की प्रवृत्ति प्रारम्भ से ही रही है। वह न केवल अपने आस–पास के परिवेश से ही परिचित होना चाहता है अपितु जगत् के अन्य क्षेत्रों में क्या घटित हो रहा है, वह भी जानना चाहता है। वह सम्पूर्ण जगत् को मानो एकत्रित कर एक स्थान पर ही केन्द्रित करना चाहता हो। मानव की यही जिज्ञासा पत्रकारिता के श्रीगणेश का मूल कारण रही है।

पत्रकारिता एक ऐसी शक्ति है, जो सामाजिक विकृतियों को दूर करके जनमानस में मंगलकारी सुधारों और निर्माणकारी तत्त्वों एवं मूल्यों की स्थापना करती है। पत्रकारिता का उद्देश्य अतीत के गर्भ में आवृत हुए रहस्यों को अनावृत करके, वर्तमानकालीन सम्पूर्ण इतिहास और भूगोल को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना है। आज पत्रकारिता का उद्देश्य बहुआयामी हो गया है, जो केवल राजनैतिक घटनाओं से ही अवगत नहीं करवाती अपितु सुप्त शक्ति को जागृत और जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए जिज्ञासाओं को शान्त कर मानव–समूह को आनन्द, सन्तोष एवं मार्गदर्शन प्रदान करती है। वह अतीत की संरक्षिका, वर्तमान की विश्लेषिका ही नहीं अपितु भविष्य की नियामिका भी है। इस प्रकार पत्रकारिता जीवन की विविधात्मक, तथ्यात्मक और यथार्थ स्थितियों को जन सामान्य तक प्रेषित करने का सशक्त माध्यम है।

पत्रकारिता का उद्भव मानव सभ्यता के साथ ही हुआ, इसलिए यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि मानव सभ्यता और पत्रकारिता सहोदर है। पत्रकारिता का मानव जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है, जो अनवरत रूप से जीवन में विद्यमान रहता है। पत्रकारिता का वर्तमान रूप युगान्तर अनुभव यात्रा के परिणामों का संचय और सूचक है। मानव सभ्यता ने जब पाषाण युग में अपनी प्रगति की नींव रखी, तत्काल में ही स्वाभाविक रूप से पत्रकारिता का यह कल्पवृक्ष बीज रूप में परिणित रहा होगा। जिस प्रकार से सभ्यता शनै–शनै समाज के स्वरूप में परिवर्तित हुई, उसी प्रकार पत्रकारिता वाणी से लिपि के आरोहण द्वारा संचार माध्यमों से परिष्कृत स्वरूप को प्राप्त हुई। आदिकाल में जब मानव सभ्यता का शैशव काल था, तब पत्रकारिता लिपि के स्पर्श से शिलालेखों और स्तम्भों में अपना रूप स्थापित कर रही थी। विश्व इतिहास में ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है कि प्रथमतः मोसोपोटामिया प्रदेश के नरेश डेरियस ने अपनी सूचनाओं के प्रसारण हेतु शिलाओं पर लेखों का उत्कीर्णन किया। भारत में सम्राट् अशोक ने गुहाभित्तियों, शिलाओं और प्रस्तर स्तम्भों पर अपनी सूचनाएँ तथा राजाज्ञाएँ उत्कीर्ण कर लोकहित में प्रसारित की। पत्र–पत्रिकाओं का उद्देश्य जनहित होता है। जिस पत्रिका में जनहित का सम्पादन नहीं होता, उस पत्रिका का जन–समूह में सम्मान भी नहीं होता। अशोक का यह जनहित मूल मन्त्र रहा– **''हेवं लोकसा हित सुखेति पटिवेखामि। अथा इयं नातिसुहेवं पत्यासनेसु हेवं अपकठेसु किमं कानि सुखं आवहामीति तथा च विदहामि''** ''मैं लोगों के हित और सुख को लक्ष्य में रखकर यह देखता हूँ कि जाति के लोग, दूर के लोग तथा पास के लोग किस प्रकार से सुखी रह सकते हैं। इसी उद्देश्य के अनुसार मैं कार्य करता हूँ।'' अतएव पत्रकारिता का पूर्व रूप अशोक के शिलालेखों में प्राप्त होता है। जन–जन तक राजकीय क्रियाओं के प्रचार–प्रसार हेतु अशोक ने शिलालेखों को माध्यम बनाया जो कि चिरस्थायी साहित्य भी है। **''अशोक के शिलालेखों का मुख्य उद्देश्य लोक–हित था।''**[3] उसके अनुसार उसने जीवन में जो कुछ किया है, उसका रहस्य यह है कि भविष्यकाल में मानव जाति उनका आचरण करें और उनके नियमों को अपने जीवन में व्यवहृत करें, यथा– **''इमं च धंमा नु पटीपती अनुपटी पजंतु ति एतदथा मे एस कटे।''**[4]

अशोक के पश्चात् उत्कीर्ण निबन्धों की धारा प्रचलित हुई। गद्य के स्वाभाविक विकास की रूपरेखा में रुद्रदामन् (150 ई.) का शिलालेख अद्वितीय है। यह एक साहित्यिक और सूचनात्मक कोटि की पत्रिका का रूप था। इन्हीं शिलालेखों में संस्कृत पत्रकारिता का बीज भी निहित है। संस्कृत पत्रकारिता के ऐसे पूर्व रूप प्राप्त होने पर उसे आधुनिक युग की नवीन प्रवृत्ति कहना समीचीन नहीं है। वर्तमान काल की पत्रकारिता प्राचीन काल के उपर्युक्त प्रयासों का सर्वोच्च विकास है।

शिलालेखों के अतिरिक्त एक पुस्तक की एकाधिक प्रतिलिपियाँ प्रकाशित की जाती रही हैं। जिस प्रकार आज एक पत्रिका की कई प्रतियाँ होती हैं, उसी प्रकार सुदूर प्राचीन काल में एक पुस्तक की कई प्रतियाँ बनाई जाती थी। उनके मूल में यही धारणा होती थी कि तत्सम्बन्धी ज्ञान का प्रचार और प्रसार अधिक से अधिक व्यक्तियों में हो और यही साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का भी लक्ष्य रहता है अतः इन प्रतिलिपियों में पत्रकारिता का उद्देश्य दृष्टिगोचर होता है। एवमेव ताम्रपत्रों, ताड़पत्रों और वस्त्रों में भी अनेक प्रकार के लेख लिखे हुए प्राप्त होते हैं। मूलतः यही पत्रकारिता का प्राक्तन स्वरूप प्रतीत होता है।

पत्रकारिता के आधुनिक स्वरूप का उद्भव मुद्रणालय के आविष्कार से हुआ। भारत में अंग्रेजी शिक्षा के साथ ही प्रिंटिंग प्रेस का प्रादुर्भाव हुआ। भारत में गोवा में 1560 ई. में प्रैस की स्थापना हुई तत्पश्चात् 1772 ई. में मद्रास में और 1779 ई. में कलकत्ता में प्रैस की स्थापना की गई। 29 जनवरी 1780 ई. में गैर भारतीय जेम्स अगस्टस हिकी ने पहला पत्र प्रकाशित किया था। **बंगाल गजट एण्ड कलकत्ता एडवर्टाइजर जिसे हिकीज गजट कहा जाता है।**[5] वर्तमान युग सूचना क्रान्ति एवं संचार क्रान्ति का युग है जिसमें अधिक से अधिक जानकारी को शीघ्र प्राप्त करने की जिज्ञासा में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप विज्ञान एवं तकनीकी जगत् में परिवर्तन होकर चहुँमुखी विकास के मार्ग खुले है अतः कम्प्यूटर वेबसाइट, सेटेलाइट एवं प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रोनिक मीडिया के प्रचार–प्रसार का व्यापक प्रभाव परिलक्षित है। जहाँ एक ओर पत्र–पत्रिकाओं एवं उनके संस्करणों की संख्या में वृद्धि हुई है उपरिवत् दूसरी ओर टेलीविजन के नवीन चैनलों की भी वृद्धि हो गई है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति से अब तक पत्रकारिता का राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय विकास में उल्लेखनीय योगदान रहा है जिससे साहित्यिक एवं सांस्कृतिक प्रगति भी त्वरित गति से हुई है। संस्कृत पत्रकारिता के विकास पर गहनता से विचार करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि सामाजिक सामंजस्य का सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब पत्रकारिता में प्रतिबिम्बित होता है। यह आधुनिक संस्कृत साहित्य की दिशा में एक समुज्ज्वल और नितान्त उपादेय आयाम है। यद्यपि भारत देश में संस्कृत **पत्रकारिता का अंकुर मुगलकाल**[6] से ही प्राप्त होने लगा था तथापि इसका व्यवस्थित स्वरूप अंग्रेजों के शासन के पश्चात् ही माना जा सकता है। यह सत्य है कि उन्नीसवीं शताब्दी के क्रान्तिकारी संस्कृत मनीषियों ने नवीन विचारों और राष्ट्रीयता बोध के प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहण किया है। ''पत्र–पत्रिकाएँ समाज का जीवन रहीं हैं, विशेषतः संस्कृत पत्रकारिता द्रविण प्राणायाम साध्य व्यवसाय रहा है क्योंकि **लाभ की भावना से इन पत्र–पत्रिकाओं का शुभारम्भ नहीं हुआ था और यह न सम्भव ही है।''**[7] विद्यावाचस्पति विद्वद्वरेण्य अप्पाशास्त्री राशिवडेकर '**संस्कृत–चन्द्रिका**' के आरम्भ में स्पष्टतः कहते हैं कि ''**संस्कृत पत्रकारिता से धन की अभिलाषा सम्भव नहीं है।''**[8] अतएव देववाणी में पत्रिकाओं के प्रकाशन की प्रेरणा या तो दैवी मानी जा सकती है या सेवात्मक अथवा स्वाभाविक।

पत्रकारिता आज का एक सशक्त संचार माध्यम है जिसका मूल उद्देश्य जनमानस की चेतना को प्रसृत करना, परिष्कृत करना, जनसेवा की भावना उत्पन्न करना, भ्रष्टाचार–उन्मूलन का प्रयास करना, शोषण का निषेध करना, लोकमंगल की स्थापना करना, शासन और जनता के मध्य संवाद उपस्थित करना आदि है। इन्हीं उद्देश्यों से इसका स्वरूप निर्मित होता है। भारत में आधुनिक युग का आरम्भ 'पुनर्जागरण' के साथ ही हुआ। इस पुनर्जागरण के कारण ही पाश्चात्य विश्व को अधिकाधिक जानने के लिए मानव मन में जिज्ञासा जागृत हुई और इसके लिए आङ्ग्लभाषा का ज्ञान आवश्यक माना जाने लगा। परिष्कारवादी आन्दोलन (सुधारवादी आन्दोलन) के प्रमुख संचालक और भारतीय नव जागरण के उन्नायक राजा राम मोहनराय ने इस तथ्य को हृदय में धारण करके आङ्ग्लभाषा में शिक्षाप्रचार के पक्ष का समर्थन किया। इस प्रकार आधुनिकता के मूल वैशिष्ट्य की समग्रता को सम्पूर्ण रूप से आत्मसात् करने के लिए अपेक्षित भूमिका का निर्माण हुआ।

आङ्ग्लशिक्षा के कारण ही सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक परिवेशात्मक परिवर्तन आरम्भ हो गया। इस परिवर्तन से प्रभावित हुए व्यक्तियों के दो वर्ग बन गए– एक वर्ग था, जिसने आधुनिकता को कोई नवीन फैशन मानकर आङ्ग्ल जीवनपद्धति से अभिभूत होकर भारतीयता को कम महत्त्व दिया तथा दूसरा वर्ग वह था, जो कि भारतीय शिक्षा, राजनीति, अर्थनीति एवं विज्ञानादि के द्वारा यूरोपीय विश्व को प्रभावित करने के लिए एकत्रित हुआ। राजाराममोहनराय उस समय के विशिष्ट पत्रकारों में से अन्यतम है जिन्होंने ऐसी प्रशंसनीय परम्परा प्रतिष्ठित की, जो कि आधुनिक भारत की ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए भी उपकारिणी सिद्ध हुई। आङ्ग्लशासित भारत में प्रशासन की अनुदार नीति से भारतीय जन पीड़ित होता था। राजाराममोहनराय ने परिष्कारवादी आन्दोलन को आरम्भ करके नवीन विचारकों और परिष्कारकर्ताओं को प्रेरित किया। उसी काल में एक ओर सामाजिक कलुषता के प्रक्षालन के लिए उपक्रम किया गया था तो दूसरी ओर हमारी सामाजिकी चेतना प्रखर की गई थी। तब आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिष्कार के लिए आरम्भ किए गए आन्दोलन से अत्यधिक सक्रियता के निरन्तर प्रवर्तन के लिए स्वाधीन वार्तापत्रों की प्राथमिक आवश्यकता अनुभव हुई। इस विशिष्ट अवधारणा को मन में धारण करके उन्होंने आङ्ग्लभाषा, बाङ्गलाभाषा, फारसीभाषा एवं हिन्दीभाषाओं में अनेक वार्तापत्र प्रकाशित करने प्रारम्भ कर दिये। इससे पहले प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम (1857 ई.) से पूर्व कलकत्ता से अनेक हिन्दी भाषिक पत्र–पत्रिकायें प्रकाशित हुईं, जिनमें 'बंगदूत', 'प्रजामित्र', हिन्दीभाषिक प्रथम दैनिक पत्र 'उदन्तमार्तण्ड' और 'समाचारसुधावर्षण' अन्यतम है। इस तथ्य को धारण करके डॉ. सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय ने लिखा है कि **''यदि कलकत्ते को हिन्दी की आधुनिक गद्यशैली की जन्मभूमि कहा जाए तो कुछ अत्युक्ति न होगी।''**

बीसवीं शताब्दी के आरम्भिक बीस वर्षों में हिन्दी पत्रकारिता का मूल स्वर उग्रराष्ट्रीयता ही था। भाषा आन्दोलन भी पत्रकारिता के माध्यम से निरन्तर बलवान् होता गया। इसके साथ ही लिपि आन्दोलन भी आरम्भ हुआ, क्योंकि व्यापकता से प्रसार करने के लिए 1906 ई. में कलकत्ता से ही '**देवनागर**' नामक वार्तापत्र प्रकाशित हुआ था। ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय पत्रकारिता का यह इतिहास अभूतपूर्व और अप्रतिम प्रयोगपूर्ण था। तत्पश्चात् गान्धीयुग की पत्रकारिता के साथ ही हिन्दी भाषा की साहित्यिक पत्रकारिता का भी उद्भव हुआ। यहाँ स्मरणीय है कि जिस प्रकार राजाराममोहनराय से लेकर पं. जवाहरलाल नेहरु तक, उसके पश्चात् डॉ. राममनोहर लोहिया तक आधुनिक भारतीय राष्ट्रीयता के प्रायः प्रत्येक रचनाकार पत्रकार भी हुए, उसी प्रकार

आधुनिक हिन्दी साहित्य के अत्यधिक श्रेष्ठ लेखक भी जिस किसी भी प्रकार से पत्रकारिता से सम्बद्ध हुए। यह परम्परा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' तक स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है।

पत्रकारिता के आरम्भिक स्वरूप में आङ्ग्लभाषा की पत्र–पत्रिकाओं की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। पत्र–पत्रिकाओं का इतिहास अत्यन्त विस्तृत है परन्तु यहाँ यह जानना आवश्यक है कि नियतरूप से आङ्ग्लभाषा में प्रकाशित वार्तापत्रों में 1620 ई. के अन्तिम चरण में प्रकाशित होने वाला **'एमस्टर्डम्'** प्रथम वार्तापत्र था। 1702 ई. के मार्च मास के 11 वें दिन प्रकाशित होने वाला **'कोरांट्'** आङ्ग्लभाषा का प्रथम दैनिक पत्र था। इसी प्रकार 1826 ई. के मई मास की 30 तारीख को देवनागरी लिपि में हिन्दी भाषा में प्रथम साप्ताहिक पत्र **'उदन्तमार्तण्ड'** पं. जुगलकिशोर शुक्ल ने आरम्भ किया था। इसके पश्चात् 1829 ई. के मई मास की 10 तारीख को **'बंगदूत'** नामक पत्र का प्रकाशन हुआ। 1854 ई. में कलकत्ता से **'समाचारसुधावर्षण'** नामक दैनिक पत्र प्रकाश में आया। इस प्रकार अनेक हिन्दी भाषिक पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित होनी प्रारम्भ हो गईं। वहीं दूसरी ओर संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में भी सम्पूर्ण देश में विरलरूप से पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। 1866 ई. के जून मास की प्रथम दिनांक में **'काशीविद्यासुधानिधि'** नामक संस्कृत पत्रिका के प्रकाशन से संस्कृत पत्रकारिता का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात् 1869 ई. में श्रीमान् बटुहृषीकेश ने **'विद्योदय'** नामक संस्कृत मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। इस पत्र के प्रकाशन के साथ ही संस्कृत पत्रकारिता में व्यंग्यशैली का उद्भव हुआ। 'विद्योदय' नामक पत्र अपनी लोकाभिमुख प्रवृत्ति से एवं ओजपूर्ण भाषा से सर्वत्र प्रशंसनीय एवं सुप्रसिद्ध हुआ। इसी मध्य अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, परन्तु संस्कृत पत्रकारिता के इतिवृत्त में उल्लेखनीय 36 वर्षों के अन्तराल के पश्चात् त्रिवेन्द्रम् से 1907 ई. के जून मास के प्रथम दिनांक में **'जयन्ती'** नामक प्रथम संस्कृत दैनिक पत्र प्रकाशित हुआ, जो कि कुछ अंकों में प्रकाशित होने के पश्चात् अवरुद्ध हो गया। इस प्रकार विभिन्न भाषिक पत्र–पत्रिकाओं का इतिवृत्त अत्यन्त विस्तृत है।

भारतीयस्वातन्त्र्य के पश्चात् भी हिन्दीभाषा, आङ्ग्लभाषा और संस्कृतभाषा में विविध पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ, परन्तु यहाँ ध्यातव्य है कि स्वातन्त्र्य प्राप्ति के पूर्व भारतीय पत्रकारिता का मुख्य स्वर था **'राष्ट्रीयता के गौरव का पुनः प्रतिष्ठापन एवं आङ्ग्लशासन से मुक्ति'**। विभिन्न भाषाओं वाली पत्र–पत्रिकाओं से उसी लक्ष्य को ग्रहण किया गया परन्तु समयानुसार स्वातन्त्र्योत्तरकालिकी पत्रकारिता अत्यधिक व्यवसायोन्मुखी हो गई। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में उत्पन्न सूचना क्रान्ति के कारण अब आधुनिक पत्रकारिता में विविधता परिलक्षित हुई है। एक ही भाषा में प्रकाशित होने वाले पत्र के, विभिन्न विषयों को आधार मानकर पृथक्–पृथक् अंक (संस्करण) प्रकाशित किये जा रहे हैं। इन विषयों में बाल पत्रकारिता, क्रीड़ा पत्रकारिता, वाणिज्य पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, कृषि पत्रकारिता, चलचित्र पत्रकारिता, युवा पत्रकारिता, महिला पत्रकारिता, धार्मिक पत्रकारिता, आध्यात्मिक पत्रकारिता, ब्रेल पत्रकारिता, सर्वोदय पत्रकारिता आदि अन्तर्भावित होते हैं। यहाँ छायांकन पत्रकारिता (फोटोजर्नलिज्म) भी अन्यतम है। इससे भिन्न दृश्य पत्रकारिता और श्रव्य पत्रकारिता में रेडियो, दूरदर्शन आदि अत्यधिक प्रचलन में आए, इन माध्यमों की महती भूमिका की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसी प्रकार सूचना–प्रविधि की क्रान्ति के परिणामस्वरूप कम्प्यूटरीकृत विश्वव्यापक अन्तर्जाल स्थापित हुआ। विविध प्रकार की ई–पत्र–पत्रिकाएँ भी आधुनिक पत्रकारिता की अङ्गीभूत हुई हैं। वेबसाईट्स नामक विद्युत् आणविक प्रणाली को आधार बनाकर 'पोर्टल्' नामक अन्तर्जालिक पत्र के माध्यम से किसी भी भाषा में विश्व के किसी भी भाग में स्थित जन दिन–रात अन्तर्जाल के माध्यम से (इण्टरनेट् के द्वारा) पत्र को देखने, पढ़ने और सुनने में समर्थ होता है। इस प्रकार आधुनिकी पत्रकारिता का स्वरूप वैविध्यपूर्ण एवं अतुलनीय है।

वर्तमान काल में टीवी चैनल्स् दिन–रात वार्ता का प्रसार करते हैं। वैश्विकग्राम की अवधारणा के कारण अनेक विधाओं की पत्रकारिता का स्वरूप अत्यधिक व्यापक एवं विस्तृत देखा जाता है। संचार माध्यमों की एवं विद्युत आणविक उपकरणों की सुलभता के कारण आज अल्पशिक्षित अथवा बहुशिक्षित जन सदा के लिए पत्रकारिता के साथ सम्बद्ध है, चाहे उसे शिक्षा का ज्ञान हो अथवा नहीं हो, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है। प्राचीनकाल में जहाँ समाचार प्रेषण हेतु आदिकवि वाल्मीकि द्वारा हनुमान को दूत बनाया गया है, मेघदूत में कालिदास मेघ को दूत बनाते हैं, वहीं अब आधुनिककाल में पत्रों के माध्यम से समाचार प्रेषण होता है। इस प्रकार प्राचीनतम प्रवृत्ति इक्कीसवीं शताब्दी में पूर्णतया विकसित एवं पल्लवित हुई है। सुस्पष्ट रूप से प्रदर्शित है कि प्राचीनतम शताब्दी से लेकर पत्रकारिता के आधुनिक काल की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है।

आधुनिक समाचारपत्रों के उद्गम के अन्वेषण के लिए यदि विगत समय पर दृष्टिपात किया जाए तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि संसार के सम्पूर्ण तथ्यों को कहीं अंकित करने या लिखकर रखने की इच्छा मनुष्य में उसकी संस्कृति के उदय के पूर्व भी रही है। भारतवर्ष में इस प्रकार के असंख्य प्रमाण प्राप्त होते हैं। समाचार आदि से अवगत होने के लिए दूत, चर, भाट आदि प्राचीन काल में राजादिकों के यहाँ रखे जाते थे, परन्तु भारतवर्ष में आधुनिक प्रकार की पत्रकारिता का विकास अंग्रेजों के समय से ही हुआ है। विदेशों से आये हुए पत्रकारों ने भारतवर्ष में पत्रकारिता का बीजारोपण किया, वह अंकुरित हुआ और शनै–शनै सतत उसका विकास होता गया। भारतीय पत्रकला यूरोप से भारत में आई और निरन्तर विकासोन्मुख होती रही।

भारत में प्रथम समाचार पत्र 20 जनवरी 1780 को जेम्स आगस्टस हिक्की के सम्पादकत्व में **'बंगाल गजट'** नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् अनेक पत्र अंग्रेजी भाषा में ही विभिन्न स्थानों से प्रकाशित किए गए। देशी भाषा का प्रथम पत्र बंगला में 1817 ई. में **'दिग्दर्शन'** नाम से प्रकाशित हुआ। इस पत्र के प्रकाशन के पश्चात् पत्रकारिता में अत्यन्त प्रगति हुई और अनेक भाषाओं में मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों का प्रकाशन हुआ। वैज्ञानिक आविष्कारों की बढ़ती हुई संख्या के कारण मानवीय जीवन में अत्यधिक परिवर्तन आए है। कागज एवं मुद्रणयन्त्र के आविष्कार से पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं का मुद्रण एवं प्रकाशन सुकर हुआ। जैसा कि सर्वविदित ही है कि मानव की दृष्टि सदैव अन्वेषणात्मक होती है। वह नवीन तथ्यों एवं नवीन घटनाओं को जानने के लिए सदा ही उत्सुक रहता है। प्रशासन हो, लोकतन्त्र हो अथवा राजतन्त्र, सभी अपने नागरिकों की सूचना के लिए और ज्ञान के लिए उद्घोषणा करवाते है, जिसमें सन्देश, उद्घोषणा आदि को लिखकर पत्रादि सम्प्रेषित किये जाते है। **'रामचरितमानस'** में गोस्वामी तुलसीदास ने वर्णित किया है कि दशरथ की मृत्यु के पश्चात् यह वृतान्त कुमार भरत को बोध कराने के लिए धावक (दूत) को भेजा गया था–

'दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा।

धावहु बेगि भरत पहिं जाहू।

नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू।

सुनि मुनि आयसु धावन धाए।

चले बेग बर बाजि लजाए।'[9]

इसी प्रकार '**मेघदूतम्**' नामक खण्डकाव्य तो सुप्रसिद्ध ही है जिसके विषय में सामान्य अध्येता जानते है कि महाकवि कालिदास ने अपनी अनुपम शैली से यक्ष के विरह सन्देश को भेजने के लिए मेघ की इच्छा की थी। '**अभिज्ञानशाकुन्तलम्**' नामक नाटक में भी शकुन्तला अपने मनोगत भावों को प्रकट करने के लिए राजा दुष्यन्त को उद्देश्य करके एक पत्र लिखती है। पूर्वकाल में भारतवर्ष में संसार में वार्ताप्रेषण के लिए अनेक जन कार्यरत थे, उनमें दूत, चर, भाट, धावक आदि अन्यतम है।

जगत् में विभिन्न भाषाओं में पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास क्रमिक रूप से शनै–शनै हुआ परन्तु संस्कृत पत्रकारिता के लिए स्थिति कुछ भिन्न थी। संस्कृत भाषा देववाणी, प्राचीनतम भाषा, पूर्णा, गणितात्मिका और वैज्ञानिकी है अतः इस भाषा की प्रकृति को जानने के लिए भाषावैज्ञानिकों ने भाषा को वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत के रूप में दो प्रकार से विभक्त करके भाषा के वाङ्मय विस्तार को अभिव्यक्त किया। इस प्रकार वैदिक एवं लौकिक संस्कृत वाङ्मय में वार्ताहरण, कथाप्रेषण, संवादसंचय, उद्घोषणा–ज्ञापन, सन्धि–हस्ताक्षराङ्कन एवं सामञ्जस्य–पत्रों की मुद्रा से प्रमाणीकरण इत्यादि विषय प्राप्त होते है सम्राट् अशोक ने गुहाभित्तियों पर, शिलाओं पर एवं प्रस्तर खण्डों पर सर्वजनहित के लिए अपनी सूचनाएँ उत्कीर्ण करके उनका प्रचार–प्रसार किया। इसी मध्य संस्कृत पत्रकारिता का उद्भव हुआ। संस्कृत पत्रकारिता शनै–शनै समृद्ध होती हुई वर्तमान में अपने विषिष्ट स्थान को धारण किए हुए है, यह सुप्रसिद्ध है।

सामान्यतः पत्रकारिता का मुख्य लक्ष्य होता है– **विभिन्न घटनाओं अथवा जनों के विषय में वैविध्यपूर्ण वृत्तों का प्रकाशन एवं उपस्थापन।** पत्र अथवा पत्रिका को लिखकर, प्रेषित कर एवं मुद्रित करवाकर उन्हें एकत्रित किया जाता था। विश्व के इतिहास में उल्लेख है कि सर्वप्रथम मोसोपोटामिया प्रदेश के राजा डेरियस ने अपनी सूचना के प्रसार के लिए शिलाओं पर लेख उत्कीर्ण किए थे। इसी प्रकार ताम्रपत्रों, ताड़पत्रों एवं वस्त्रों पर अनेक विधा में लिखे हुए लेख भी प्राप्त होते हैं। इन सबसे पत्र–पत्रिकाओं की सम्पूर्ण पत्रकारिता का पूर्व स्वरूप निश्चित रूप से प्रकट होता है।

यह सर्वविदित ही है कि संस्कृत भाषा का कथा वाङ्मय अत्यधिक प्राचीन है। वैदिक कथा को जगत् के प्राचीनतम उपन्यास के रूप में कहा जा सकता है वहीं लोककथाओं और पशुपक्षियों की कथाओं का इतिहास भी संस्कृत साहित्य में प्राचीनतम स्थान को प्राप्त है। '**पञ्चतन्त्रम्**' जगत् का प्राचीनतम कथासंग्रह है, परन्तु लघुकथा में जिस रीति का प्रयोग किया गया, उसका शुभारम्भ पाश्चात्य के प्रभाव से ही स्वीकृत किया जाता है। यह शुभारम्भ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ, ऐसा डॉ. राघवन् आदि विद्वानों का मानना है। तत्पश्चात् '**संस्कृत वाङ्मय का इतिहास**' में आधुनिक काल के सन्दर्भ में देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने कहा है कि **''लघुकथा लेखन का यह प्रभाव साक्षात् पाश्चात्य भाषा से ही नहीं अपितु बाङ्ग्ला आदि भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्राप्त हुआ। यहाँ सर्वाधिक योगदान संस्कृत पत्रकारिता का था, जिसके कारण लघुकथादि रचनाएँ प्रकाश में आईं।''**

'विद्योदय' (1871 ई.), 'संस्कृत–चन्द्रिका' (1893 ई.), 'संस्कृत–रत्नाकर' (1904 ई.), बंगाल की संस्कृतसाहित्यपरिषद्पत्रिका इत्यादि में राष्ट्र के संस्कृत कवि, लेखक एवं पत्रकारों का कथा साहित्य प्रकाश में आया। यद्यपि भारत में सर्वप्रथम संस्कृत पत्रिकाओं का विवरण **डॉ. अर्नेस्टहॉस** ने दिया। उनके द्वारा दो पत्रिकाओं का सामान्य परिचय दिया गया। तत्पश्चात् **मैक्समूलर** ने अपने ग्रन्थ में संस्कृत के अध्ययन–अध्यापन विषयक कई उल्लेख किए हैं। उन्होंने लिखा है कि **''संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जो आज भी देश के एक प्रदेश से अन्य प्रदेश तक व्यक्तियों के द्वारा बोली एवं जानी जाती है।''** एल.डी.बर्नेट ने अपने ग्रन्थ में पत्र–पत्रिकाओं का यथाशक्ति विवरण दिया है। यह विवरण 1886 ई. से 1928 ई. तक प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं का ही है। विद्यावाचस्पति अप्पाशास्त्री राशिवडेकर ने एक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया था, जिसका नाम था– **'संस्कृतचन्द्रिका'**। इस पत्रिका में सर्वप्रथम अनेक संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का विस्तृत विवरण एवं समीक्षण प्राप्त होता है। 1907 ई. में विन्टरनित्स ने संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं के विषय में अमूल्य योगदान दिया। 1913 ई. में '**संस्कृतरत्नाकर**' नामक मासिक पत्रिका एवं '**वासन्तिक–प्रमदः**' नामक लेख में अनेक प्राचीनतम संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का नामोल्लेख किया गया है। तत्पश्चात् गुरुप्रसादशास्त्री, दीनानाथशास्त्री, सारस्वत, एम. कृष्णमाचारियार, आर.एन.दाण्डेकर, चिन्ताहरण, चक्रवर्ती, वी.राघवन्, शंकरलालशर्मा, गणेशराम शर्मा, रामगोपालमिश्र, श्रीधरभास्करवर्णेकर, राधावल्लभत्रिपाठी आदि के ग्रन्थों और लेखों में भी संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। डॉ.रामगोपाल मिश्र ने ''**संस्कृत–पत्रकारिता का इतिहास**'' नामक अपने शोधप्रबन्ध में 1960 ई. तक की प्रकाशित एवं प्रकाश्यमान संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

संस्कृत पत्रकारिता इतर भाषाओं की अपेक्षा कुछ विशिष्ट महत्त्व रखती है। संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही आज भी कन्याकुमारी से हिमालय तक भारत सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं भौगोलिक एकता का अनुभव करता है इसी कारण सभी राज्यों में संस्कृत पढ़ी, लिखी, मुद्रित एवं प्रकाशित की जाती है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् यद्यपि अधिकांश संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ तथापि उनमें स्वतन्त्रता की भावना विशेष रूप से परिलक्षित हुई। इनमें देश के लिए बलिदान होने वाले वीरपुरुषों की गाथा गाई गयी। राष्ट्र के अभ्युत्थान की कामना और पंचशील तथा राष्ट्रध्वज सम्बन्धी साहित्य का प्रकाशन हुआ। इस युग में प्रकाशित होने वाली पत्र–पत्रिकाओं में स्फुट गीत अधिक प्रकाशित हुए है। गान्धीवाद का स्पष्ट प्रभाव पड़ा और उनके विषय में अनेक कवितायें लिखी गईं। 'भारतं त्यज' की भावना इस युग में 'भारत भा रतम्' में परिवर्तित हो गई। भारत और भारती तथा देश की विभूतियों का वर्णन प्रारम्भ हुआ। इस युग में पद्य गीत, स्फूर्तिदायक देशभक्ति पूर्ण कवितायें और ओजस्वी वर्णनात्मक कवितायें पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। विविध विषय सम्बन्धी लेख, कहानियाँ, नाटक और उपन्यास तथा ऐतिहासिक गवेषणा, अनुवाद आदि प्रकार का साहित्य इस युग में विशेष रूप से प्राप्त होता है। प्रेमगीत तथा सौन्दर्यगीत स्वतन्त्र रूप से लिखे गये। मुक्तक छन्द को स्वीकृत किया गया। इस काल में बाल साहित्य पर भी अधिक लिखा गया।

आधुनिक स्वतन्त्र भारत में संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक नवीन मासिक, द्वैमासिक, साप्ताहिक और पाक्षिक संस्कृत–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं परन्तु स्वातन्त्र्यप्राप्ति के पूर्व स्थिति ऐसी नहीं थी। संस्कृत में दैनिक वार्तापत्र का प्रकाशन सर्वथा दुष्कर कार्य है, तथापि 1907 ई. में जनवरी मास के प्रथम दिनांक से '**जयन्ती**' नामक प्रथम संस्कृत दैनिक पत्र केरल राज्य के त्रिवेन्द्रम् नगर से प्रकाशित हुआ। कोमलमारुताचार्य और लक्ष्मीनन्दस्वामी इस संस्कृत दैनिक पत्र के सम्पादक थे परन्तु अर्थ एवं ग्राहकों के अभाव के कारण कुछ दिनों के पश्चात् ही इसका प्रकाशन स्थगित हो गया।

संस्कृत पत्रकारिता के इतिहास में यह ध्यातव्य है कि संस्कृत पत्र–पत्रिकाओं का विकास प्रायः मासिक पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ ही आरम्भ हुआ। 1866 ई. में जून मास के प्रथम दिनांक से '**काशीविद्यासुधानिधि**' नामक प्रथम संस्कृत मासिक पत्रिका काशी से प्रकाशित हुई। पत्रिका का अपर नाम 'पण्डित' था। इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य दुर्लभ एवं अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन करना रहा। पत्रिका में अनेक प्राचीन प्रामाणिक संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित हुए।

वर्तमान में लगभग 230 वर्षों से अधिक समय व्यतीत हो गया, जब पत्रकारिता का कोमलांकुर भारत की भूमि में अंकुरित हुआ था और तब से उत्तरोत्तर विकसित होता जा रहा है। साहित्यिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक पत्रों के प्रकाशन के साथ–साथ, संख्या में वृद्धि तथा उनका क्षेत्र भी व्यापक होता जा रहा है। यद्यपि भारत में समाचार पत्रों का प्रारम्भ, वास्तविक अर्थ में अंग्रेजों द्वारा हुआ था, परन्तु वर्तमान में यह पूर्णतः अपने देश की वस्तु है और देश की ही भूमि में उत्पन्न वृक्ष के समान इसमें प्राण और जीवनदायिनी शक्ति है। कला, शिल्प, सम्पादन, समाचार–संकलन और शीर्षक–संचयन तथा सम्पादकीय टिप्पणी आदि दृष्टियों से भारतीय पत्र–पत्रिकाओं का विश्व की पत्रकारिता में महत्त्वपूर्ण स्थान हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति और समाज के जीवन को अत्यन्त प्रभावित करने वाली पत्रकारिता वह विधा है जो स्वसंस्कृति और प्राचीन संस्कृति परम्परा के प्रति समाज के नवशिक्षित नवयुवकों के सुप्त स्वाभिमान को जागृत करने एवं समाज को एक नवीन दिशा का बोध कराने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है, अतः साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही मानवता एवं सद्भावना के वातावरण को शक्ति, प्रतिष्ठा और तीव्रगति प्रदान करने वाले हैं। समाचारों का प्रकाशन भी जनहित की मूल भावना से प्रेरित है परन्तु नियतकालिक साहित्य समाचार पत्रों से विहीन है, क्योंकि नियतकालिक साहित्य की आत्मतत्त्व संस्कृत पत्रिकाओं में मात्र सुरभारती के प्रचार–प्रसार, उसके प्राचीन एवं अर्वाचीन वाङ्मय को प्रकाशित करने का उद्देश्य निहित है। यद्यपि संस्कृत भाषा सामान्य व्यवहार की भाषा नहीं है, तथापि इस देश के मानवों की जीवन सरणि के प्रायः सभी क्षेत्रों में न्यूनाधिक इसका समावेश है। सभी प्रान्तों के प्रमुख नगरों से संस्कृत की पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन अखण्ड भारत की वैचारिक एकता और दृढ़ सूत्रबद्धता का परिचायक है। आधुनिक भारत में वैज्ञानिक प्रगति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों के कारण आहार–विहार, सामाजिक चिन्तन, दिनचर्या में परिवर्तन, पारिवारिक एवं व्यावसायिक सम्बन्धों में विघटन, चिरन्तन शाश्वत मूल्यों के प्रति उपेक्षा का भाव आदि असंख्य कारण है जिनसे भारतीय समाज की संघटना विश्रृंखलित हो रही है। संस्कृत पत्रकारिता का यह गुरुतर दायित्व भी है कि वर्तमानकालीन समाज जो कि किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के मार्ग पर स्थित है उसे अग्रसर करते हुए सर्वप्रथम वैयक्तिक एवं सामाजिक परिष्कार के दायित्व का निर्वहण करना चाहिए और देश में प्रचलित अनेक भाषाओं की पत्रकारिता की स्पर्धा में अपने को नवीन और प्रेरक भंगिमाओं के साथ प्रस्तुत करते हुए मानवता की संरक्षा हेतु मूल्यपरक जीवनपद्धति की प्रतिष्ठा में योगदान करना चाहिए। इसके साथ ही सामाजिक विघटन, जाति–विद्वेष, शोषण, उत्पीड़न, हिंसा, बालश्रम, नारी–जाति की संरक्षा जैसे विषयों में जागृति उत्पन्न करनी चाहिए और समस्त विश्व को **'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्', 'सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः'** प्रभृति चिरन्तर काल से चले आ रहे वैदिक उद्घोषों को विश्व पटल पर प्रसारित कर सभी के श्रेय और प्रेय का सम्पादन सुनिश्चित करना चाहिए तभी संस्कृत पत्रकारिता की एक प्रमुख पहचान बनेगी और इसकी सार्थकता सिद्ध होगी, क्योंकि संस्कृत मनीषियों के मानस में सौभाग्य से मानवता के कल्याण हेतु अपार वैचारिक कोश विद्यमान है। उनके आचरण में धर्म, नीति, सदाचार और शुचिता का कभी नष्ट न होने वाला अपार संग्रह है, ऐसी स्थिति में संस्कृत पत्रकारिता में विषाद, उदासीनता और निराशा का स्थान ही कहाँ शेष रहता है।

सन्दर्भ

1. आधुनिक पत्रकारिता, पृष्ठ 10
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी, पृ. 86
3. Pillar edict vi मे धंमलिपि लिखापिता लोकसा हित सुखाये, कटवियमुते हि मे सर्वलोकहितैः
4. Pillar edict vii मे धंमलिपि लिखापिता लोकसा हित सुखाये, कटवियमुते हि मे सर्वलोकहितैः पृ. 111
5. हिन्दी पत्रकारिता, पृ. 167–168
6. Journalism in Modern India, P. 19
7. संस्कृतचन्द्रिका, 7.9 'पत्राणि समाजस्य जीवनानि, तथापि द्रविणसाध्य एवायं व्यवसायः'।

8. संस्कृतचन्द्रिका, 5.1 शारदा (प्रयाग) 2.12 'संस्कृतपत्रिकया कश्चन धनमर्जयितुं शक्नोतीति न कोऽपि विशेषतः प्रत्ययमादधाति वचनेऽत्र'।
9. अयोध्याकाण्ड, दोहा–157